Paper - I

B.A. Part - III

8 MONDAY

REMINDERS

काव्य की परिभाषा

काव्य → काव्य का स्वरूप बड़ा व्यापक है। यह जितना व्यापक है उतना ही सूक्ष्म भी है। इसीलिए इस लक्षण को परिधि में बांधना अत्यन्त कठिन कार्य है। फिर भी आदि काल से आज तक काव्य को लक्षण निर्माण एवं परिभाषाओं में बांधने का प्रयत्न किया जाता रहा है। इतना होने पर भी काव्य का विकासशील स्वरूप लक्षणों एवं परिभाषाओं की सीमा से बाहर ही दिखाई पड़ता है।

संस्कृत काव्य लक्षण → आदि आचार्य भरत का नाट्य शास्त्र प्रथम काव्यशास्त्रीय ग्रंथ है जिसमें काव्य के कई अंगों पर विचार किया गया है।

9 TUESDAY

REMINDERS

"मृदु ललित पदाढ्यं गूढ शब्दार्थ हीनम्,
जनपद सुख बोध्यं युक्तिमन्नृत्ययोज्यम्।
बहुरस कृत मार्गं सन्धिसन्धान युक्तम्।
स भवति शुभकाव्यं नाटक प्रेक्षकाणाम्।"

(2) अग्निपुराण ने कहा है कि "शब्द अर्थ को प्रकट करने वाली पदावली से युक्त ऐसा वाक्य काव्य जिसमें अलंकार प्रकट हो और जो दोष रहित और गुण युक्त हो।"

(3) आ० भामह — "शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्" शब्द, अर्थ का संयोग काव्य है।

(4) आ० रुद्रट → "ननु शब्दार्थौ काव्यम्" शब्द और अर्थ दोनों काव्य है। आ० मम्मट "दोष रहित गुणयुक्त और कभी-2 अलंकार विहीन शब्दार्थमयी रचना को काव्य कहते हैं।"

10 WEDNESDAY

REMINDERS

(5) आ० विश्वनाथ → वाक्यं रसात्मकं काव्यम्

रस-युक्त वाक्य काव्य है। अर्थात् विभाव, अनुभाव और संचारी भाव के संयोग से जिसकी निष्पत्ति होती है, वह रस जिस वाक्य में निहित हो, काव्य है।" जो मृदुल तथा ललित पदों से युक्त हो, गूढ़ शब्द और अर्थ से रहित, सर्वग्राह्य, सबको सुखद लगने वाला, नृत्य में प्रयुक्त करने योग्य, रस की अनेक धाराओं को बहाने वाली, सन्धियों के संधान से युक्त हो, वही श्रेष्ठ काव्य है।

Scanned with CamScanner

आ० वामन." रीति को काव्य की आत्मा स्वीकारते हुए श्रेष्ठ पदरचना को रीति कहते है!

अंग्रेजी काव्य-लक्षण

11 THURSDAY REMINDERS

① अरस्तू - It is an imitation by means of words.
अरस्तू ने काव्य के भाषा के माध्यम से होने वाली ऐसी अनुकृति कहा है जो मन पर अमिट प्रभाव छोड देती है।

② कवि कॉलरिज ने कहा है कि "सर्वोत्तम शब्द अपने सर्वोत्तम क्रम में कविता होते है।"
Poetry is the best words in their best order.

③ Wordsworth – "कविता प्रबल अनुभूतियों का सहज उद्रेक है, जिसका स्त्रोत शांति के समय में स्मृत मनोवेगों से फूटता है।"

12 FRIDAY REMINDERS

यह परिभाषा तथ्यपूर्ण है क्योंकि यह भावानुभूति और अभिव्यक्ति की प्रक्रिया को स्पष्ट करती है। जानसन "काव्य वह कला है जो भोग और प्रेम का सामंजस्य कराती है, एवं जिसमें विवेक की सहायता से कल्पना का प्रयोग किया जाता है"

④ मैथ्यू आर्नल्ड "कविता अपने मूल रूप में जीवन की आलोचना है।" Poetry is at bottom a criticism of life. इलियट → "कविता भावनाओं को खोल कर रख देना नहीं, अपितु उससे बचना है, वह व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति नहीं, अपितु व्यक्तित्व से बचकर निकल जाना है।"

⑤ Milton – कविता में सादगी एवं कुशलता और रागात्मकता पर बल दिया है।

13 SATURDAY REMINDERS

⑥ Wilson – काव्य में बुद्धि तत्व व भावना तत्व का मिश्रण माना है। शैली — "कल्पना की अभिव्यक्ति कविता है।"
मैकाले – "कविता शब्दों की चित्रकला है।"

हिन्दी काव्य-लक्षण →

① आ० रामचन्द्र शुक्ल "जिस प्रकार आत्मा की मुक्तावस्था ज्ञान दशा कहलाती है, उसी प्रकार हृदय की मुक्तावस्था रस-दशा कहलाती है। हृदय की

Scanned with CamScanner

JANUARY

SU	MO	TU	WE	TH	FR	SA	SU	MO	TU	WE	TH	FR	SA
				1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29									

1996 FEB

15 MONDAY

इसी मुक्ति की साधना के लिए मनुष्य की वाणी जो शब्द विधान करती आयी है उसे कविता कहते हैं। (चिंतामणि - भाग-I)

REMINDERS

(2) जयशंकर प्रसाद (छायावादी कवि)

"काव्य आत्मा की संकल्पात्मक अनुभूति है जिसका सम्बन्ध विश्लेषण, विकल्प या विज्ञान से नहीं है। वह एक श्रेयमयी प्रेय रचनात्मक ज्ञान धारा है।"

(3) महादेवी वर्मा → "काव्य में सत्य एवं सौन्दर्य का सामंजस्य स्वीकार किया है। काव्य में

16 TUESDAY

कला का उत्कर्ष एक ऐसे बिंदु तक पहुंच गया जहां से वह ज्ञान को भी सहायता दे सकता था कि सत्य काव्य का साध्य है तथा सौन्दर्य उसका साधन है।"

REMINDERS

(4) डॉ. श्यामसुन्दर दास "काव्य वह है जो हृदय में अलौकिक आनंद या चमत्कार की सृष्टि करे।"

(5) बाबू गुलाब राय - "काव्य संसार के प्रति कवि की भाव-प्रधान मानसिक प्रतिक्रियाओं की कल्पना द्वारा ढली हुई श्रेय की प्रेयरूपा प्रभावोत्पादक अभिव्यक्ति है।"

17 WEDNESDAY

(6) आ० महावीर प्रसाद द्विवेदी → "सादगी, असलियत और जोश यदि तीनों गुण कविता में हो तो कहना ही क्या? परन्तु बहुधा अच्छी कविता में एक आध गुणों की कमी पाई जाती है।"

(7) आ० नन्द दुलारे वाजपेयी "काव्य तो प्रकृत मानव-अनुभूतियों का नैसर्गिक कल्पना के सहारे ऐसा सौन्दर्यमय चित्रण है जो

REMINDERS

मनुष्य मात्र में स्वभावतः अनुरूप भावोच्छ्वास और सौन्दर्य संवेदन उत्पन्न करता है। इसी सौन्दर्य-संवेदन को भारतीय पारिभाषिक शब्दावली में रस कहते हैं। यद्यपि यह स्वीकार करना होगा कि 'रस' का हमारे यहां दुरुपयोग भी कम नहीं किया गया।

1996

Scanned with CamScanner